ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 06
June 2017

जिंदगी की गस्त में

सुनीता देवी

एक नन्हा सा जान
लेकर उंगली का सहारा
था शीखा चलना
दौरना और खेलना
सीखा था हँसाना
लोगों के साथ चलना
पर इसी जिंदगी की रेल में
हर कोई साथ नहीं करता सवारी
चलना परता है
कभी अकेले भी
अनजाने रस्ते पे
हर रह चलते लोग
बनते नहीं हमसफ़र
इसी जिंदगी की दौर में
किसी न किसी मोर पे
रह चलते पत्थर से
लग जाती है ठोकर
खून बहता है, दर्द होता है

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 06
June 2017

चीखता चिल्लाता
दर्द से तड़पता है
दर्द को ही दवा बनाता
आंसू को मरहम बनाता
दिन बिताता, रात काटता
जिन्दगी की रह पे
चलते चलते
कभी फुल मिलता
कभी कांटें चुभता
कही धुप मिलती
कही छाव मिलता
रस्ते पे मोड़ आती
पड़ाव मिलता
थकन मिटती
मन प्रसन्न होता
आगे बदने के लिए
नयी उर्जा मिलता
नयी आशाएं जगती
और खुशियाँ मिलता
आगे बढने को मन करता
जिंदगी की राह पे

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 06
June 2017

चलते चलते
आशाएं बुझती
मन छोटा होता
आदमी थक जाता
तन भी बेचारा क्या करता
जब मन ही हरे
और उमंग मिटे
हिम्मत हारे
तभी मौत आती
या जिंदगी यु ही बितती